BA-I Date 3/09/2020 Page-1.
Paper- I
Unite - 7

Dr. Raj Gopal.
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

## Nayaya: Classification of Perception (Lecture-3)

अलौकिक प्रत्यक्ष :- इसमें इन्द्रियों का विषयों के साथ असाधारण संबंध होता है। इस प्रत्यक्ष का उदय अलौकिक सन्निकर्ष से होता है। न्याय दर्शन में अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन भेद होते हैं। (a) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष (b) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष (c) योगज प्रत्यक्ष

(a) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष :- जिस प्रत्यक्ष से जाति का प्रत्यक्ष होता है। उस प्रत्यक्ष को सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं। राम, श्याम, मोहन आदि को देखकर मनुष्यत्व का प्रत्यक्ष सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष है। राम श्याम को देखकर मनुष्य का ज्ञान सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष है। विशेष वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण के आधार पर उसमें निहित जाति का प्रत्यक्ष ही सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष है। जैसे गाय, घोड़, हाथी को देखकर पशुत्व का प्रत्यक्ष ही सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष है। इन सभी जानवरों को पशु के अन्तर्गत रखते हैं। यह प्रत्यक्ष सामान्य गुणों पर आधारित होता है।

(b) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष :- मानव अपनी इन्द्रियों के द्वारा अनेक वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करता है। प्रत्येक इन्द्रियों का अलग-अलग विषय होता है, जैसे आँख से रूप का, कान से शब्द का नाक से गन्ध का आदि। एक इन्द्रिय से दूसरी इन्द्रियों के विषय का ज्ञान साधारणतः संभव नहीं है। आँख से

शब्द का, कान से रूप का ज्ञान संभव नहीं है।

ज्ञान लक्षणा प्रत्यक्ष अलौकिक प्रत्यक्ष का वह भेद है जिसके द्वारा इन्द्रिय अपने विषय से भिन्न विषय का ज्ञान भी ग्रहण करती है। जैसे रसगुल्ला को देखते ही मुँह में पानी आ जाना। बाघ को देखते ही डर जाना, आदि। रसगुल्ले के मीठेपन का ज्ञान जीभ के द्वारा संभव है। परन्तु ज्ञान लक्षणा प्रत्यक्ष से रसगुल्ले को देखकर ही उसके मीठेपन का ज्ञान हो जाता है।

न्याय दर्शन में भ्रम की व्याख्या ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष के द्वारा किया जाता है। रस्सी को साँप समझ लेना भ्रम है। जब हम रस्सी को साँप इसलिए समझते हैं कि हमारे पूर्व के अनुभव में साँप की स्मृति वर्तमान अनुभूत रस्सी के अनुभव से मेल खाता है। इस कारण रस्सी में साँप का भ्रम हो जाता है।

योगज प्रत्यक्ष :⇒ साधारण मानव की इन्द्रियों की शक्ति सीमित है। हम दूर एवं सूक्ष्म विषयों को देख नहीं पाते हैं। दूर के आवाज को नहीं सुन पाते हैं। परन्तु कुछ असाधारण व्यक्तियों में योगज ज्ञान पाया जाता है। जिसके द्वारा वे भूत, वर्तमान भविष्य सूक्ष्म सभी प्रकार की वस्तुओं का अनुभव करने लगते हैं। यह ज्ञान मुख्यतः योगियों में होता है। यह ज्ञान दो तरह का होता है। जो योग की पूर्णता को प्राप्त कर लिया है उनमें यह ज्ञान शाश्वत होता है। इस प्रकार के व्यक्ति को युक्त कहा है। जो योग में पूर्ण नहीं है जिन्हें आंशिक सिद्धि प्राप्त है, उन्हें ध्यान लगाने की आवश्यकता होती है। ऐसे पुरुष को युंजान कहा जाता है। यह ज्ञान योगियों को प्राप्त है। इसलिए इसे योगज ज्ञान कहते हैं।

Scanned with CamScanner